Total No. of Questions : 4] [Total No. of Printed Pages : 4

(1108)

UG (CBCS) RUSA IIIrd Semester (Old) Examination

1323

SANSKRIT

(Mahakavya, Chhand Tatha Vyakaran)

(Major/Minor)

BASKT–0305

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 70**

नोट :– सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के सभी भाग एक ही स्थान पर हल कीजिए।

भाग-क

1. (अ) अधोलिखितानां प्रश्नानाम् अतीव संक्षेपेण एकपदेन वा उत्तरं लिखत– 1×10=10

(क) वागर्थाविव सम्पृक्तौ कौ ?

(ख) मगधवंशजा का ?

(ग) किरातार्जुनीयमहाकाव्ये सर्गाणां संख्या का ?

(घ) किरातकाव्यानुसारेण विरोधः कैः सह वरं भवति ?

(ङ) छन्दशास्त्रानुसारेण विसर्गयुक्तः स्वरः लघु भवति गुरुर्वा।

(च) बसन्ततिलकाछन्दस्य लक्षणं लिखत।

(छ) यथानिर्दिष्टं रूपं लिखत-सुधातु लिट् लकार प्रथम पुरुष द्विवचन।

(ज) दिलीपः प्रजाभ्यः बलिम् कथमग्रहीत्।

(झ) शमेन सिद्धिम् के व्रजन्ति ?

(ञ) "राम राजा हुए" संस्कृत भाषायां अनूद्यताम्।

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए— 5×4=20

(क) छन्दशास्त्र के अनुसार गण कितने हैं ? प्रत्येक के लघु-गुरु चिह्नों को प्रदर्शित करते हुए उनके नाम लिखिए।

(ख) रघुवंश में वर्णित राजा दिलीप की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

(ग) "विद्यामभ्यसनेनैव प्रसादयितुमर्हसि" सूक्ति की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(घ) गुप्तचर के रूप में वनेचर की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(ङ) "सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिम् नृपेष्वमात्येषु सर्वसम्पदः" सूक्ति की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

भाग-ख

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए— 1×10=10

(क) महाकवि कालिदास के जीवन-वृत्त एवं कृतित्व का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

अथवा

(ख) महाकवि भारवि के जीवन-वृत्त एवं कृतित्व का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

भाग-ग

3. निम्नांकित में से किसी **एक** भाग के प्रश्नों को हल कीजिए— 5+5=10

(क) किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के आधार पर द्रौपदी के कथन का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) रघुवंश में वर्णित महर्षि वसिष्ठ के आश्रम का वर्णन कीजिए।

अथवा

(क) 'शिखरिणी' छन्द का लक्षण एवं उदाहरण लिखकर संगति भी लिखिए।

(ख) हु और दिव् धातु के रूप लिट् लकार में लिखिए।

भाग-घ

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** भाग के प्रश्नों को हल कीजिए— 3×5=15

(अ) निम्न पद्यों का प्रसंग सहित सरलार्थ लिखिए—

(क) व्यूदोरस्कः वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः।
आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः॥

(ख) अथाभ्यर्च्य विधातारं प्रयतौ पुत्रकाम्यया।
तौ दम्पत्ती वशिष्ठस्य गुरोर्जग्मतुराश्रमम्॥

(ग) उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वङ्गेषु यस्य मे।
दैवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम्॥

(ब) लिट् लकार की क्रिया का प्रयोग करते हुए निम्नांकित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए— 1×5=5

(क) मनु आदिराजा हुए।

(ख) दशरथ ने हवन किया।

(ग) प्राचीन काल में वसिष्ठ नामक महर्षि हुए।

(घ) लक्ष्मण ने भी वन में फल खाए।

(ङ) संजय ने धृतराष्ट्र से कहा।

अथवा

(अ) निम्नांकित पद्यों का प्रसंग सहित सरलार्थ कीजिए– 3×5=15

(क) तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।
समुन्नयन् भूतिमनार्यसंगमाद् वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः॥

(ख) महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः स वेद निःशेषमशेषितक्रियः।
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धिभिः प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः॥

(ग) अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः॥

(ब) लिट् लकार की क्रिया का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए– 1×5=5

(क) प्राचीनकाल में जनक नामक राजर्षि हुए।

(ख) राम और सीता ने वन में फल खाए।

(ग) राजा रघु ने हवन किया।

(घ) श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा।

(ङ) पाण्डव वन गये।